S.R.S.D. Memorial Shiksha Shodh Sansthan, Agra, India
UGC Sl. No.64431

INQUISITIVE TEACHER

A Peer Reviewed Refereed Research Journal
ONLINE ISSN-2455-5827
Volume V, Issue II, December 2018, pp. 155-157
www.srsshodhsansthan.org

उत्तराखण्ड (जौनसार–बावर क्षेत्र) की आस्थाएँ एवं लोक मान्यताऐं (महासू देवता के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. दीपक कुमार
इतिहास विभाग, बी0एस0एम0 (पी0जी0) कालेज, रूड़की, उत्तराखण्ड

सार

जौनसार–बावर जनजातीय क्षेत्र उत्तराखण्ड की राजधानी जनपद देहरादून के चकराता एवं कालसी तहसील क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित है। यह क्षेत्र अपनी धार्मिक आस्थाओं एंव लोक परम्पराओं के कारण आसपास के समाज से बिल्कुल भिन्न रहा है। इसे महाभारत काल से ही 'पाण्डवों की कर्मस्थली' के रूप में जाना जाता रहा है। इनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में पाण्डवानी संस्कृति की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। यह बहुपति प्रथा वाला क्षेत्र रहा है। जौनसारी समाज पाँच पाण्डवों भीम, युधिष्ठर, अर्जुन, नकुल व सहदेव को अपना ईष्ट देवता व माता कुन्ती एवं द्रौपदी को देवी के रूप में पूजते हैं। पूरे क्षेत्र में जगह–जगह पर पाण्डवों के मन्दिर व ''पाण्डों की चौरीयाँ'' पाण्डव काल से ही बनी हुई हैं। जिसमें आज भी जौनसार–बावर के लोग पर्वो एवं उत्सवों के मौके पर विधिवत् पूजा–अर्चना करते रहते हैं। पाण्डवों के अलावा जौनसार–बावर वासियों का श्रेष्ठ ईष्ट, देवता (महाशिव का अवतार) 'महासू देवता' है। आज भी इस क्षेत्र के लोगों के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन के क्रियाकलापों का संचालन हनोल स्थित महासू देवता के आदेशानुसार ही चलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में महासू देवता के प्रति आस्था एवं लोक विश्वास का विस्तृत वर्णन किया गया है।

सार शब्द ;ज्ञमल ूवतकेद्ध– रू पाण्डवों की चौंरी, महासू, गंडीयर, पौंतीयर, राजगुरू, बाजगी, खत, खुमड़ी, सोडामेंड, भंडारी चार चौतरू आदि।

प्रस्तावना ;प्दजतवकनबजपवदद्ध

उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी जनपद देहरादून से लगभग 120 किलोमीटर दूरी पर महासू देवता का मन्दिर त्यूनी के निकट हनोल नामक पवित्र स्थान पर टौंस नदी के समीप स्थित है। मान्यता है कि इस मन्दिर का निर्माण पाण्डवों में स्वयं भीमसेन ने समीप स्थित शिवालिक पहाड़ी से पत्थर लाकर किया था।[1] आज इस पौराणिक भव्य मन्दिर निर्माण की शैली अद्वितीय है। इसमें बत्तीस कंडारे (कोने) व शीर्ष भाग में एक भव्य छतरी है, जिसे 'भीम की छतरी' कहते हैं। मन्दिर का द्वार जिसमें शिव, पार्वती व गणेशजी की मूर्तियाँ पत्थर के स्तम्भों पर तरासकर बनायी गयी है। मन्दिर की भव्यता को देखकर लगता है कि द्वापर में स्वयं विश्वकर्मा जी ने आकर इस मन्दिर को सजाया संवारा होगा। महासू देवता की उत्पत्ति के बारे में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। कहा जाता है कि महासू देवता मांस के ढ़ेर से उत्पन्न हुए थे।

ई.टी. एटकिंसन ने भी 'हिमालयन गजेटियर' में महासू देवतओं की उत्पत्ति इसी प्रकार बतलायी है।[2] लेखक दिगम्बर सिंह तोमर जौनसारवासी के अनुसार 'महासू देवताओं 'की उत्पत्ति 'मांस के ढ़ेरों से' बतलायी है।[3] इनके अनुसार कलियुग के प्रारंभ में लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व कुरू कश्मीर मे एक सुन्दर सरोवर के समीप विमलदेव जी महाराज का राज्य हुआ करता था। उनकी पत्नी माता देवलाड़ी बड़ी दयालु, धर्मात्मा महिला थी। स्वयं राजा विमलदेव जी महाराज भी आलौकिक शक्ति एवं सिद्धियों से परिपूर्ण थे। उनकी धर्मपत्नी माता देवलाड़ी के गर्भ से चार पुत्र उत्पन्न हुए। ये चार पुत्र – 1. श्री वासिक देव, 2. श्री बौठा महासू देवा, 3. श्री पवासिक देवजी, 4. श्री भड़वाना देव जी। क्योंकि इन चारों देवताओं के

पूर्वज मांस के ढेर से पैदा हुए थे। इसलिए इन्हें 'मासू' (महासू) कहा जाने लगा। ये चारों भाई आलौकिक सिद्धियों से परिपूर्ण होने से आज भी जौनसार–बावर में ईष्ट आराध्य देव के रूप में पूजे जाते हैं। इन चार देवताओं के साथ कार्तिक स्वामी जी के रक्त बूदों से चार वीर–शेरकुड़िया, रंगवीर, कयलूवीर, व कपिलावीर पैदा हुए थे। आज भी ये वीर इन चारों देवताओं की आत्मा के साथ चलते रहते हैं।[4] जौनसार–बावर मे इन वीरों की पूजा की जाती है। देवताओं के मन्दिरों के साथ इन वीरों के मन्दिर भी बने हैं।

चारों महासू देवताओं के मन्दिर–

हनोल के अलावा महासू देवताओं के मन्दिर जौनसार–बावर के गाँवों में भी स्थापित हैं। चारों महासू देवताओं की 'माता देवलाड़ी का मन्दिर' मैन्द्रथ गाँव में बनाया गया। हुनाभाट ने इसी स्थान पर माता देवलाड़ी की मूर्ति को हल लगाकर भूमि से प्राप्त किया था। तभी से यह मन्दिर माता देवलाड़ी की पूजा–अर्चना के लिए निर्मित किया गया था।[5] आज भी सम्पूर्ण जौनसार–बावर के लोग इस मन्दिर में पूजा–अर्चना करते हुए इच्छित फल की कामना करते हैं।

1– वासिक देवता का मन्दिर देवधार बावर में है। यहाँ पर वासिक देवता की नियमित पूजा–अर्चना होती है।

2– पवासिक देवता को पाशिबिल का क्षेत्र दिया गया। जहाँ उसकी नियमित पूजा व्यवस्था चलती है।

3– बौठा महासू देवता का मन्दिर हनोल में स्थित मुख्य मन्दिर है। यहाँ पर पूर्ण व्यवस्था के साथ पूजा होती है।

4– चालदा देवता का कोई निश्चित स्थान नहीं है परन्तु प्रत्येक बारह वर्ष में चालदा देवता की डोली एक मन्दिर से दूसरे मन्दिर में भाई महासू देवताओं के साथ रखी जाती है। प्रत्येक बारह वर्ष में चालदा देवता की डोली जागड़ा पर्व या 'बंराश' पर पुरे क्षेत्र में धुमायी जाती है। इस दिन सभी लोग देवता की डोली को भेंट चढ़ाकर मन्नत मांगते हैं। जो कि निश्चित पूरी होती है।

हनोल स्थित महासू देवता के आदेश पर वर्षों पूर्व थैना में महासू देवता का मन्दिर बनाया गया। उस काल में इस मन्दिर का निर्माण चौबीस खतों के लोगों ने मिलकर कठिन परिश्रम से बनवाया था। इसकी दीवारें मजबूत पत्थरों से निर्मित हैं एवं छत देवदार की लकड़ी से बनायी गयी है। इस मन्दिर में महासू देवता व चालदा देवता की मूर्तियाँ स्थापित हैं। मन्दिर के साथ ही चार वीरों के छोटे–छोटे चार मन्दिर बने हैं। इन देवताओं के साथ उस समय हनोल से सेवकगण आदि थैना आयें। थैना में आज भी संगीपोड़ा, जोगड़ा, खंइचाण, दियाड़ (सेवक), भूरियों ढाकी (बाजा बजाने वाला) एवं (पुजारी) इंदाण ब्राह्मण आदि मन्दिर की पूजा व्यवस्था देखते हैं। मन्दिर के समीप तालाब में नरगिस फूल का पौधा है जिसकी फूल एवं पत्तियों को मन्दिर में चढ़ाया जाता है। यहाँ पर मन्दिर में पूजा व्यवस्था एवं मन्दिर की देखरेख करने के लिए राजगुरू, बजीर, पुजारी, भण्डारी, गंडीयर, पोंतीयर, बाजगी, ठाणी, सोड़ामेंड आदि पदाधिकारी भी नियुक्त हैं। चालदा देवता का जागड़ा पर्व थैना मन्दिर से ही आरंभ होता है। चालदा देवता की डोली कचटा (खत–कोल), लखवाड़ (खत–लखवाड़), कोटा (खत–तपलाड़), चन्दाऊ (खत–अठगाँव) व जिसऊ (खत–सिलगाँव) आदि क्षेत्रों से भ्रमण करती हुई मुख्य मन्दिर थैना में वापस पहुँचती है। कुछ वर्षो बाद फिर डोली उक्त स्थानों में भ्रमण के लिए निकलती है। इन पर्वो पर सभी भक्तों की खान–पान व्यवस्था व पूजा–पाठ की व्यवस्था यहाँ के मन्दिर पदाधिकारियों द्वारा सम्पन्न की जाती है।

हनोल स्थित महासू देवता की पूजा व्यवस्था–

हनोल स्थित महासू देवता का मन्दिर जौनसार–बावर के साथ–साथ उत्तरकाशी एवं हिमाचंल प्रदेश के निवासियों की गहन आस्था एवं विश्वास का केन्द्र भी है। उत्तराखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से भी श्रद्धालु इस मन्दिर में अपनी मन्नत मांगने के लिए आते रहते हैं। टौंस घाटी में स्थित यह भव्य–विशाल मन्दिर आज अपनी विशिष्ट शैली के कारण पर्यटकों का भी मनमोह लेता है। ''उत्तराखण्ड़ पुरातत्व विभाग'' द्वारा यह मन्दिर संरक्षण में लिया गया है। मुख्य मन्दिर दो खण्डों में विभाजित है। बाहरी कक्ष से भक्तगण अपनी भेंट को पण्डित के हाथों में सौंप कर पण्डित द्वारा अन्दर स्थित गर्भगृह पर माता देवलाड़ी व चार भाई महासू की मूर्तियों में भेंट चढ़ाकर भक्तों की मनोकामना के लिए पूजा–अर्चना किया करते हैं। विशेष पर्वो एवं त्यौहारों के सुअवसर पर जौनसार–बावर के चौबीस खतों के लोग भेंट स्वरूप अपनी फसल का कुछ हिस्सा, गहनें व मनोती के रूप में बकरा (घाण्डवा) चढ़ाकर अपनी आस्था प्रकट करते हैं। इस मन्दिर की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं देखरेख के लिए पहले से ही चार चौतरू एवं चौबीस खतों के लोंगो ने मिलकर अनेक पदाधिकारी नियुक्त किये हैं। जो पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करते रहते हैं। जो इस प्रकार है :–

बजीर – बजीर हनोल मन्दिर में बजीर सर्वश्रेष्ठ पद होता है। बजीर को देवता के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। यह पद वशांनुगत होता है। सभी पदाधिकारियों को बजीर के आदेशानुसार कार्य करना होता है। हनोल की तरह थैना में बुद्याण परिवार के देवता के बजीर है।

राजगुरू – नाथ या जोगड़ा (जोगी) राजगुरू कहलाता है। यह वंशानुगत पद होता है। प्रत्येक पीढ़ी में एक व्यक्ति जोग धारण करके महासू देवता की पूजा में 'शंखनाद' करता है। वह जोगी बनकर पीले वस्त्र, कान में मोटे काले कुण्डल व गले में रूद्राक्ष की माला पहनकर देवता का बखान करता रहता है। जोगी अपने को ऋषि वशिष्ठ का वंशज बतलाते हैं।

पुजारी – देवता के मन्दिर में प्रातः साँय नियमित पूजा की व्यवस्था चलती रहती है। पुजारी का परिवार मांस, मदिरा का सेवन नहीं करता है। प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति पूजा का कार्य में अपनी बारी से मन्दिर में जाते रहते हैं। हनोल स्थित महासू मन्दिर के पुजारी जात्रा, मैन्द्रथ, पुरटाड़ एवं खत पचंगाव, नैहरा के भट्ट, नौटियाल व डोभाल आदि जातियाँ हैं। जो वर्ष भर अपनी बारी–बारी से पूजा अर्चना करते हैं।

भण्डारी – जौनसार–बावर के चौबीस खतों के प्रमुख परिवार के व्यक्तियों को भण्डारी का कार्य सौंपा जाता है। भण्डारी का कार्य क्षेत्र से चढ़ावें में आया अनाज, धन–रूपया आदि का हिसाब रखना होता है।

गंडीयर – सुबह शाम देवता के दरवार में घण्टी बजाने का कार्य थैना गाँव के लोग बारी–बारी से करते हैं।

पोंतीयर – पोंतीयर का कार्य मन्दिर के अन्दर–बाहर आंगन आदि में साफ–सफाई करना होता है। साफ–सफाई का कार्य देवता के दियाड़, (सेवक) भी किया करते हैं।

बाजगी – पूजा के समय ढोल, नगाड़ा व रणसिंगा बजाने वाला वर्ग 'बाजगी' कहलाता है। बाजगीयों द्वारा प्रातः काल प्रभाती बजाकर ढोल, नगाड़े की धुन एवं ताल के साथ महासू देवता की पूजा अर्चना करायी जाती हैं पुनः साँय चार बजे भी ढोल बजाकर देव स्तुति की प्रक्रिया नियमित चलती रहती है।

ठाणी – ठाणी का कार्य प्रातः मन्दिर में पहुँचकर स्नान करके पुजारी, पोतीयर, गंडीयर, भण्डारी, बजीर के लिए भोजन तैयार करना होता है। इस कार्य को खत पंचगाँव के लोग आपस में बारी–बारी से करते हैं। मन्दिर के पदाधिकारी आपस में भी विचार–विमर्श करके अपने ही मध्य से ठाणी की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति को सौंप देते हैं।

सोड़ामेड़ – सोड़ामेड़ का कार्य पूरे चौबीस खतों से फसल तैयार हो जाने पर अनाज एकत्रित करना होता है। प्रत्येक परिवार से अनाज जमा करके कार सेवकों के द्वारा मन्दिर में पहुँचाया जाता है। इसे 'देवता का भण्डार' मानकर पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा से सभी लोग अनाज मन्दिर में पहुँचाने के लिए तैयार रहते हैं।

निष्कर्ष ;ब्वदबसनेपवदद्ध–

उक्त व्यवस्था से स्पष्ट पता चलता है कि जौनसार–बावर में आज भी देवी–देवताओं के प्रति पूर्ण आस्था है। महाभारत काल से ही पाण्डवों की कर्मस्थली होने के कारण इस क्षेत्र में पाण्डव कालीन संस्कृति की स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। यह पाण्डवों को अपना पूर्वज मानकर उनकी पूर्जा अर्चना करते है और इसी परम्परा में यहाँ पर बहुपति प्रथा के प्रमाण मिलते है। महासू देवता के प्रति आस्था एवं लोक विश्वास भी इस जनजाति की एक विशिष्ट पहचान है। इस मन्दिर को उत्तराखण्ड के पंचम तीर्थ के रूप में जाना जाता है। जहाँ आज भी लोक संस्कृति एवं परम्पराएँ पूर्ण रूप से जीवित एवं सक्रिय है।

सन्दर्भ–

1. जोशी के0आर0 – जौनसार बावर परिचय, पृष्ठ–52।
2. एटकिन्सन ई0टी0 – हिमालयन गजेटियर (भाग–एक)
3. तोमर दिगम्बर सिंह – महासू देवता परिचय, पृष्ठ–15।
4. चौहान चतर सिंह – जौनसार बावर महोत्सव 'स्मारिका', वर्ष 1999, पृष्ठ–09।
5. राणा जयपाल सिंह – जौनसार बावर दर्शन, पृष्ठ–97।